इस सप्ताह साठ वर्ष पूर्व चर्चिल की मृत्यु...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रूप में छवि बहुत बड़ी थी, और पाश्चात्य जगत के लोग उन्हें "स्वतंत्र विश्व" को बचाने वाले प्रचारित करते है लेकिन क्लैमेंट एटली उस समय की जरूरतों को समझने में सक्षम था।

चर्चिल जब बहुत युवा थे तब ही से भारत के प्रति उनकी एक सोच विकसित हो गई थी। उन्होंने ब्रिटिश काल में बतौर पत्रकार यहा काम किया। उन्होंने भारतीय सीमाओं पर लड़े गए कई युद्धों के बारे में लिखा। कोलकाता में उन्होंने तत्कालीन वायसरॉय लॉर्ड कर्जन से मुलाकात की इसके बाद वे ब्रिटेन लौट गए।

जब चर्चिल दूसरे विश्व युद्ध में हिटलर के खिलाफ मित्र देशों की सेना का नेतृत्व कर रहे थे उस समय 1942 में बंगाल भी जब अकाल से जूझ रहा था और ये चर्चिल ही थे, जिन्होंने उस अकाल को भीषण त्रासदी में बदल दिया था क्योंकि उन्होंने बंगाल के लिए भेजे जा रहे अनाज के जहाजों को मित्र देशों की सेनाओं के लिए भेज दिया था और लाखों भारतीय भूख से मर गए थे।

ऐसा नहीं था कि मित्र देशों की सेना भोजन के संकट से जूझ रही थी या उन्हें पर्याप्त राशन नहीं मिल रहा था, चर्चिल ने ऐसा सिर्फ इसलिए किया कि कहीं मित्र देशों की सेनाओं को अकस्मात अनाज की जरूरत पड़ जाए। चर्चिल का वह युद्ध अपराध बहुत बड़ा था पर इस पर इसलिए ध्यान नहीं दिया गया क्योंकि अकाल और भूख से मरने वाले लाखों भारतीय असहाय थे।

भारत के लिए 1942 बेहद कठिन समय था, जिसे चर्चिल ऐसा सुनहरा समय बता कर प्रचारित कर रहे थे जो हजारों सालों में एक बार आता है। यह समय है कि भारत को उन लोगों की याद में एक स्मारक बनाना चाहिए जो चर्चिल निर्णय (अन्यायपूर्ण निर्णय) की वजह से भूख से मारे गए थे। जिस अनाज की उस समय भारतीयों को सख्त जरूरत थी वह चर्चिल ने मित्र देशों की सेनाओं को दिलवा दिया।

युद्ध खत्म होने के बाद विजयी मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के युद्ध अपराधों पर विचार किया, जहां लाखों यहूदी व अन्य लोग यातना शिविरों व गैस चैम्बरों में मार डाले गए थे, पर उन्होंने भारत में भूख से मरे लाखों लोगों का कारण बने एक अपराध पर कभी भी विचार नहीं किया।

युद्धकाल में अगर चर्चिल को कोई व्यक्ति नापसंद था तो वह थे महात्मा गांधी जो चर्चिल एकदम विपरीत थे। गांधी ने ब्रिटिश साम्राज्य की "सिविलाइज्ड फोर्स" होने की धारणा को अस्वीकार कर दिया और चर्चिल को यह अस्वीकृति कतई पसंद नहीं थी।

प्रशिक्षित सैनिक चर्चिल ब्रिटिश समाज के पारम्परिक समाज और रूढिवादी परम्पराओं साथ पले बढ़े थे। इसके विपरीत गांधी ने ताकत को अंतिम परीक्षण के रूप में नकार दिया था। गांधी की राजनीति चर्चिल को स्त्रियोचित लगती थी। चरखा चलाने को चर्चिल औरतों का काम मानते थे।

तुरंत प्रभाव से विदेशों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मीमो कहता है कि वर्तमान विदेशी सहायता के स्टॉप वर्क आर्डर तत्कालीन जारी हो जायेंगे तथा तब तक जारी रहेंगे, जब तक रुबियो समीक्षा नहीं कर लेते।

यूएस एजेन्सी फॉर इंटरनैशनल डवलपमैंट (यूएसएआईडी) के एक पूर्व वरिष्ठ अधिकारी ने, अपना नाम गुप्त रखने की शर्त पर कहा, "यह एक निर्मित दुर्व्यवस्था है।"

उक्त अधिकारी ने कहा, "सभी संस्थाओं को अपनी सारी गतिविधियाँ रोक देनी पड़ेंगी तथा इसी प्रकार सभी जीवनरक्षक चिकित्सा सेवाएं, एचआईवी/एड्स, पोषण, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, सभी कृषि कार्य, शिक्षा तथा सिविल सोसायटी संगठनों की सारी सहायता रुक जायेगी।"

यूएसएआईडी के एक अधिकारी, जिन्होंने उनका नाम उजागर न करने का अनुरोध किया, ने कहा कि यूक्रेन में विभिन्न प्रोजैक्टों के जिम्मेदार अधिकारियों को सारा काम रोक देने के लिये कह दिया गया है। उस अधिकारी ने कहा कि रोक दिये गये प्रोजैक्टों में स्कूल तथा चिकित्सा सहायता, जैसे आपातकालीन मातृ-चिकित्सा तथा बच्चों के वैक्सीनेशन आदि शामिल हैं।

अगले 85 दिनों तक चलने वाली समीक्षा के बाद, क्या रुबिनो द्वारा निर्णय लिये जायेंगे कि ये सहायता कार्यक्रम जारी रहेंगे, संशोधित होंगे या रद्द कर दिये जायेंगे। उस समय तक, रुबियो ढ़ील बरतने की स्वीकृति दे सकते हैं।

मीमो के अनुसार, रुबियोने आपातकालीन खाद्य सहायता के मामलों में भी ढील दे दी है। यह ढील गाज़ा स्ट्रिप में दी गई मानवीयता की खातिर दी गई है, जहाँ इज़रायल और फिलिस्तीनी उग्रवादियों ने हमास में रविवार को युद्ध विराम की शुरुआत की थी। इसके अलावा, सूडान सहित, विश्व के अन्य कई भूख-पीड़ित क्षेत्रों में इस किस्म की ढील दी गई है।

स्टेट डिपार्टमैंट के मीमो में यह भी कहागया है कि रुबियो ने इन छूटों की स्वीकृति "इज़रायल तथा मिस्र के लिये विदेशी सैन्य वित्त-पोषण तथाउन प्रशासनिक खर्चों, जिनमें वेतन शामिल हैं, जो विदेशी सैन्य वित्त-पोषण के संचालन के लिये आवश्यक हैं।

फॉरेन मिलिट्री फायनेंसिंग के रूप में, इज़रायल को करीब 3.3 अरब डॉलर तथा मिस्र को करीब 1.3 अरब डॉलर मिलते हैं।

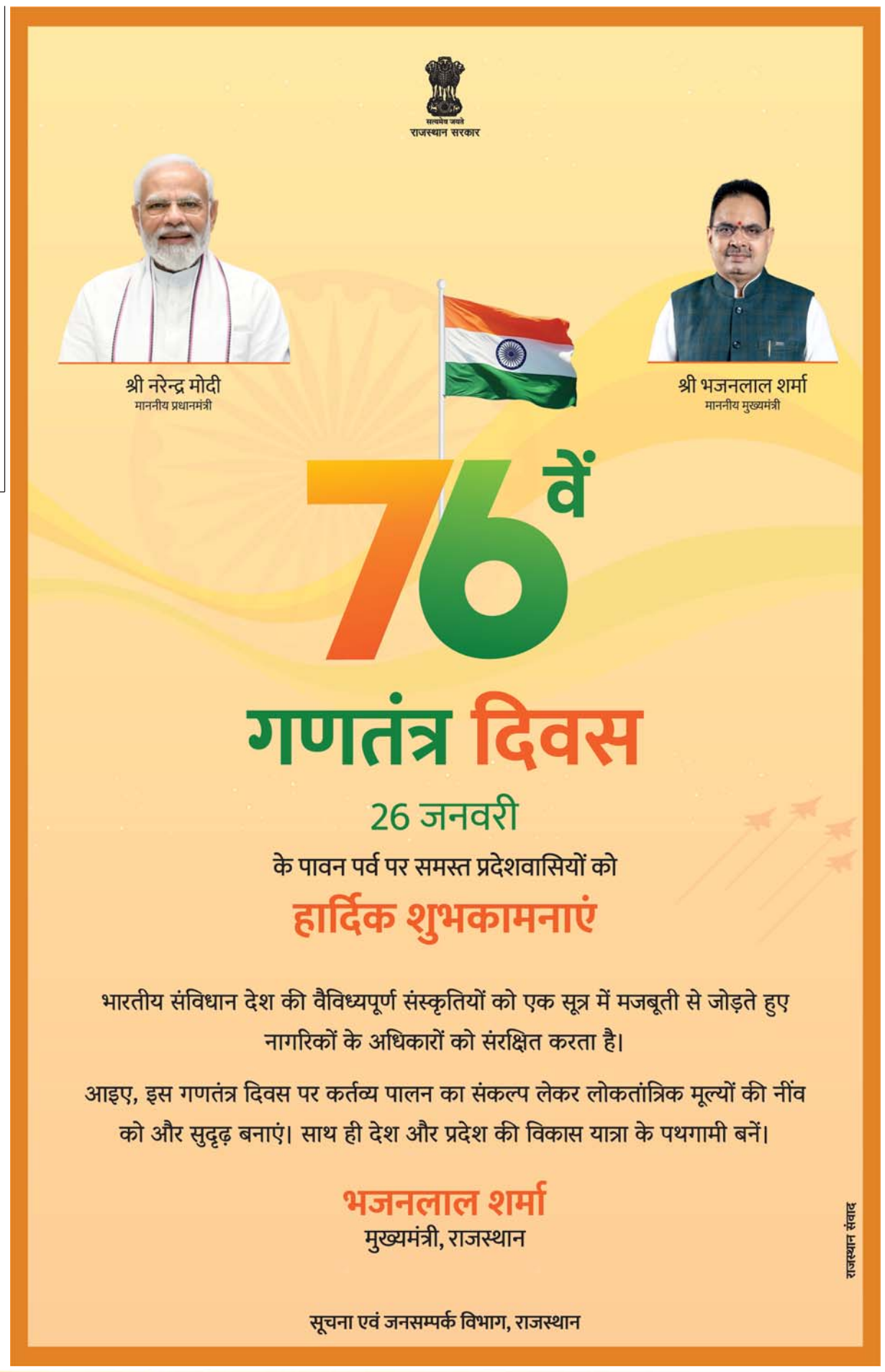

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908